Dr. Madan Paswan, History. | Lecture No. 04
Class: B.A. Part-I (Hons) P-1st | Date: 03.11.2020

Topic: प्राचीन भारत के आधुनिक इतिहासकार. Continue ...

भारतीय संदर्भ में अध्ययन को सबसे अधिक बढ़ावा जर्मनी के एफ० मैक्स म्यूलर (1823-1902) से मिला, जो इंग्लैण्ड में बसे थे। 1857 ई० के विद्रोह ने अंग्रेजों को भली-भाँति समझा दिया कि जिन पराए देशों के लोगों पर वे शासन कर रहे हैं, उनके व्यवहार और सामाजिक व्यवस्था को गहराई से समझना अनिवार्य है।

क्रिश्चियन मिशनरियों ने धर्मांतरण के लिए और ब्रिटिश साम्राज्य को सुदृढ़ करने के लिए हिन्दू धर्म के विकारों को उजागर करने की कोशिश की। जिसमें—

(क) इन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु, मैक्स म्यूलर के संपादन में प्राचीन ग्रंथों का अनुवाद व्यापक पैमाने पर किया गया।

(ख) पूर्वी पवित्र ग्रन्थमाला [यह पदबन्ध वस्तुतः भारतीय नागरिकों के रोजमर्रे की जिंदगी में धर्म के चरम हस्तक्षेप पर व्यंग्य-सा प्रतीत होता है। धार्मिक जीवन में भारतीय नागरिक इतने तल्लीन हो गए थे कि वे सामाजिक और राजनीतिक शासन की लापरवाही के प्रभाव के बारे में सोचना भी भूल गए थे।] Sacred Book of the East Series के अन्तर्गत कुल मिलाकर 50 ग्रन्थों की अनुवाद-श्रृंखला को प्रकाशित किया गया, जिनमें से कई विविध खण्डों में थे। इनमें कुछ चीनी और ईरानी ग्रंथ भी शामिल थे किन्तु प्राचीन भारतीय ग्रंथों को प्रमुखता दी गई थी।

इन ग्रंथों एवं इन पर आधारित पुस्तकों की प्रस्तावना में, मैक्स म्यूलर और अन्य पश्चिमी विद्वानों ने प्राचीन भारतीय इतिहास और समाज की प्रवृत्ति को इससे जोड़ कर बहुत ही सामान्यीकृत ढंग से देखा गया है।

उन्होंने कहा कि प्राचीन भारतीयों में इतिहास बोध का अभाव था, विशेषकर समय और क्रम के संदर्भ में। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि भारतीय नागरिक तानाशाही शासन के अभ्यस्त हो चुके थे। इति ...